Research Reinforcement | **A Peer Reviewed International Refereed Journal** | **ISSN 2348-3857**
Vol. 13, Issue 2 | **November 2025 - April 2026** | **pp. 48-54**

वॉकिज्म के दौर में सामाजिक समरसता की चुनौतियाँ एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रयास : एक समालोचनात्मक विवेचना

दीपक कुमार शर्मा
शोध-छात्र, समाजशास्त्र विभाग, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राजस्थान)
डॉ. विकास कुमार
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राजस्थान)

शोध सारांश
वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक न्याय, समानता और पहचान की राजनीति के सन्दर्भ में वॉकिज्म एक उभरती हुई सामाजिक-सांस्कृतिक विचारधारा के रूप में सामने आई है। पाश्चात्य अवधारणा वॉकिज्म विविधतापूर्ण भारतीय समाज में सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकात्मता को प्रभावित करती हुई एक चुनौती के रूप में उभरी है। प्रस्तुत शोध अध्ययन वॉकिज्म की मूल विचारधारा, इसके उद्गम एवं भारतीय समाज में इसके प्रभाव तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा सामाजिक समरसता के लिए किए जा रहे प्रयासों का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वॉकिज्म जहां व्यक्ति-केन्द्रित पहचान संघर्ष को बढ़ावा देता है, वहीं संघ का दृष्टिकोण समुदाय-केन्द्रित सांस्कृतिक एकात्मता पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य वॉकिज्म की वैचारिक पृष्ठभूमि और भारतीय संदर्भ में उसके प्रभावों का विश्लेषण करना, भारतीय समाज में समरसता की अवधारणा को समझना, आरएसएस द्वारा सामाजिक समरसता हेतु किए जा रहे प्रयासों का तुलनात्मक मूल्यांकन करना एवं वॉकिज्म और संघ-दृष्टिकोण के मतभेदों और संभावित संवाद क्षेत्रों का अध्ययन कर भविष्य के समावेशी सामाजिक नीति-निर्माण के लिए सुझाव प्रदान करना है। यह अध्ययन वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक शोध पर आधारित है। अध्ययन में वैचारिक विमर्श, साहित्यिक साक्ष्य, वैचारिक तुलनात्मकता और सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ विश्लेषण सम्मिलित है।

संकेताक्षर—*पहचान की राजनीति, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता, धार्मिक बहुलता*

प्रस्तावना

21वीं सदी में वैश्विक स्तर पर डिजिटल जनमत निर्माण एवं पहचान आधारित राजनीति तथा सामाजिक न्याय की नई विमर्श धाराओं ने सामाजिक एवं वैचारिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया है। इसी परिप्रेक्ष्य में वॉकिज्म सामाजिक असमानताओं तथा ऐतिहासिक अन्यायों के प्रति सजगता का प्रतीक बनकर उभरी है। यद्यपि इसका मूल उद्देश्य सामाजिक न्याय और समानता है, परन्तु यह कई बार अतिरंजित सक्रियता, पहचान-आधारित ध्रुवीकरण, कैंसिल कल्चर और बहुसंख्यक समुदायों या पारंपरिक मूल्यों के प्रति शत्रुता का रूप ले लेता है। भारतीय सन्दर्भ में यह विमर्श और भी संवेदनशील हो जाता है क्योंकि यहाँ बहुलता, विविधता, "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "एकत्व" की परंपरा रही है। इसी पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक राष्ट्रीयता और ग्राम्य आधारित समग्र समाज निर्माण की संकल्पना को आगे बढ़ाता है। डिजिटल युग में वैचारिक संघर्षों, समूह पहचान और सामाजिक ध्रुवीकरण की तीव्रता बढ़ी है। भारत की सांस्कृतिक बहुलता और पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं पर वॉकिज्म आधारित विमर्शों का प्रभाव देखा जा रहा है। सामाजिक न्याय और सामाजिक समरसता दोनों ही संवैधानिक मूल्यों का संरक्षण आवश्यक है। मुख्य प्रश्न यह है कि क्या वॉकिज्म सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करता है या पहचान-

ISSN 2348-3857

आधारित विखंडन को बढ़ाता है? किस प्रकार सामाजिक समरसता निर्माण में आरएसएस के प्रयास एवं डिजिटल मीडिया व जनमत निर्माण इस विमर्श को प्रभावित करते हैं? और क्या दोनों का संतुलित समन्वय एक समावेशी, उत्तरदायी एवं आधुनिक भारतीय समाज निर्माण में योगदान दे सकता है?

साहित्यिक समीक्षा

पाश्चात्य सन्दर्भ में वॉकिज्म या वोक संस्कृति को सामाजिक न्याय और असमानता के मुद्दों पर केंद्रित आंदोलन के रूप में विवेचित किया गया है। इसमें मुख्य रूप से व्यक्ति या समूह की विभिन्न सामाजिक पहचानों यथा नस्ल, लिंग और वर्ग के ओवरलैप होने से उत्पन्न उत्पीड़न और भेदभाव को व्याख्यायित कर समाधान के प्रयास हेतु भी कहा जाता है।[1] समता पर समरसता की महत्त्वता को स्पष्ट करते हुए लेखक का मानना है कि बाबा साहब आंबेडकर के विचारों के अनुरूप मात्र समता ही काफी नहीं है, इस देश के अंदर मजबूती तभी आएगी, जब समरसता के वातावरण का निर्माण होगा।[2] हिंदुत्व में समरस समाज की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए लेखक का मानना है कि हमारे यहाँ बाह्य आक्रमणों से उपजी ऊंच-नीच व अस्पृश्यता की विकृति को मानवता के प्रति अन्याय एवं अपराध के रूप में देखा जाना चाहिए। सम्पूर्ण समरसता पूर्ण या समरस समाज हमारी दीर्घ परंपरा तथा आज की अनिवार्य आवश्यकता है।[3] सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक समरस्ता हेतु आरएसएस द्वारा किए जा रहे कार्यक्रमों यथा प्रशिक्षण वर्ग, जननेता संपर्क, मंदिर केंद्रित संत सम्मेलन, मंदिर प्रवेश, साहित्य निर्मिती, महिला सम्मेलन, संविधान जागरण, दो पंगत द्वारा किए जा रहे प्रयासों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है।[4]

वॉकिज्म की संकल्पना

वोक शब्द अफ्रीकी-अमेरिकी संस्कृति से निकला है जिसका अर्थ सामाजिक अन्याय के प्रति 'जागृत' रहना है। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नस्लवाद के विरोध में प्रयुक्त यह शब्द 21वीं सदी में यह एक वैचारिक आंदोलन के रूप में उभर कर आया है। यह एक स्वश्रेष्ठ समूह के रूप में समाज को "हम एवं वो" की तरह देखती है और विपक्षियों के विरुद्ध सम्पूर्ण युद्ध की मांग करती है।5 वॉकिज्म की वैचारिकी मुख्यतः तीन तत्वों-पहचान की राजनीति, कैंसिल कल्चर और नैतिक श्रेष्ठता के आग्रह पर आधारित है। वॉकिज्म एक ऐसी विचारधारा है जो सामाजिक न्याय के लिए जागरूक होने की बात करती है, लेकिन इसका प्रयोग और अर्थ अत्यधिक विवादास्पद है और अक्सर राजनीतिक बहस में एक हथियार के रूप में इस्तेमाल होता है। इसका उद्देश्य वास्तविक मुद्दों से ध्यान हटाना या प्रगतिशील विचारों का उपहास करना होता है। विरोधी और रूढ़िवादी लोग इसे एक अतिवादी, अति-सचेत विचारधारा मानते हैं, जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करती है और 'कैंसल कल्चर' को बढ़ावा देती है। आलोचक इसे समाज को विभाजित करने वाली पहचान की राजनीति और राजनीतिक करेक्टनेस शुद्धता से जोड़कर देखते हैं।

पश्चिमी समाज में उभरती वैचारिक प्रवृत्ति वॉकिज्म में नस्ल, जेंडर, लैंगिक पहचान, उपनिवेशवाद और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों पर संवेदनशीलता और न्याय की मांग है। सामाजिक न्याय आंदोलनों से जन्मा सांस्कृतिक मार्क्सवाद यानी वॉकिज्म अब शोषित, वंचित और अल्पसंख्यक समूहों के अधिकारों की रक्षा का लक्ष्य लेकर चला है। पश्चिम में इसका विशेष जोर नस्लीय पूर्वाग्रह, जेंडर समानता और पर्यावरणीय न्याय पर है। यह राजनीतिक-सांस्कृतिक शुद्धता तथा सामाजिक चेतना की नई परिभाषा प्रस्तुत करता है।

वैचारिक ध्रुवीकरण एवं समरस समाज

सन 2010 के बाद आधुनिक सामाजिक विमर्श में कतिपय उभरती और स्थिर होती भाषाई संरचनाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले शब्द गढ़े गए हैं। इस शब्दावली में बहिष्कार प्रवृत्ति, दलित चेतना, धर्मनिरपेक्षता, क्रोनी कैपिटलिज्म, समलैंगिकता, नारीवाद, सेक्स एंड जेंडर, हंगर इंडेक्स, अल्पसंख्यक अधिकार की बढ़ती आवृत्ति ने वैचारिक प्रवाह एवं सामूहिक चेतना को प्रभावित कर सामाजिक परिप्रेक्ष्य में इसकी स्वीकार्यता को व्यापकता प्रदान की है।[5] लोकतंत्र, नैतिकता और समानता की आड़ में वॉकिज्म की यह विचारधारा इस बात को स्थापित करने में लगी हुई है कि विभिन्न सामाजिक एवं शासन प्रणाली विभिन्न पहचान समूहों को अनिवार्य रूप से दमन और उत्पीड़न के आधार पर संचालित कर रही हैं। सोशल मीडिया मंचों पर वोक एक्टिविज्म और मीमैटिक वारफेयर आधुनिक, डिजिटलीकृत सांस्कृतिक युद्ध के दो पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसमें सामाजिक न्याय के मुद्दों, कॉर्पोरेट ब्रांडिंग और राजनीतिक विचारधाराओं को तीव्र गति से, इंटरनेट आधारित संचार रणनीतियों का उपयोग करके लड़ा जाता है।

किसी भी देश, समुदाय के सांस्कृतिक मूल्यों पर आघात नैतिक रूप से अति-प्रतिक्रिया के रूप में परिलक्षित होता है। विपक्षी विचारधारा को दकियानूसी, फासीवादी, असहिष्णु कहकर डोक्सिंग-ट्रोलिंग और कैंसिल करने के अभियानों में बदल दिया जाता है। विश्वविद्यालय परिसरों में वैचारिक द्वैत का ध्रुवीकरण तीव्र हुआ है। डिजिटल सतर्कता के माध्यम से औपचारिक कानूनी प्लेटफार्म से बाहर विरोधी विचारधारा को बेनकाब करने के लिए नाम उजागर कर शर्मिंदा करना, निजी जानकारी को साझा करने और सामाजिक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से समन्वित उत्पीड़न की प्रवृत्ति देखने को मिल रही है। वास्तविकता के विपरीत पक्षपात तरीके से घटनाओं या विश्वास प्रणाली की व्याख्या कर नैरेटिव वर्चस्व के द्वारा व्यापक विश्वास को प्रभावित कर विरोधी विचारधारा को चुप करा मीडिया के माध्यम से सामाजिक एवं सांस्कृतिक नियंत्रण स्थापित करने की प्रवृत्ति ने नया आकार दिया है और वैकल्पिक दृष्टिकोणों को हाशिए पर धकेलने का कार्य किया है। इसके द्वारा समाज को अपनी संस्कृति से दूर कर विदेशी संस्कृति को मंडित कर भारतीय परम्परा और देशी संस्कृति से विरक्ति के भाव पैदा करने के लिए सांस्कृतिक अलगाव को प्रोत्साहन दिया गया है। इससे अपनी पहचान को नुकसान पहुँचाने, आत्मसम्मान में कमी और अपने ही लोगों के बीच अजनबी होने की भावना बढ़ रही है। डिजिटल समाज में समावेशी संवाद की जगह वैचारिक युद्ध ने ले ली है जिससे समाज में एक स्वस्थ एवं लोकतांत्रिक विमर्श क्षीण हो रहा है। सामाजिक समरसता के लिए घातक यह वैचारिक युद्ध अब अगला कदम भौतिक युद्ध की ओर बढ़ा रहा है।

वॉकिज्म के मायावी राक्षस के रूप में अदृश्य तरीके से बौद्धिकवाद, उदारवाद एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समलैंगिकता, आधुनिकता के नए स्वरुप में भारतीय समाज में उभर कर भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को गन्दा कर रहा है।[6] इसी सन्दर्भ में अस्पृश्यता एवं ऊंच-नीच के रूप में व्याप्त सामाजिक विषमताओं से टूट रहे भारतीय समाज के बचाव हेतु समभाव अर्थात समता के ऊपर समरसता महत्त्वपूर्ण है जो समभाव के साथ मनभाव के साथ जोड़ने से आती है।[7] समरस समाज ही शक्तिशाली राष्ट्र की नींव है। और यह मानसिकता स्वदेशी, स्वावलम्बन और पारिवारिक संस्कारों से आती है जो भारतीय समाज के सुरक्षा कवच हैं।

वॉकिज्म का भारतीय समाज पर प्रभाव

वॉकिज्म मूलतः पश्चिमी अवधारणा है जिसमें प्राकृतिक मानवीय गरिमा के विरुद्ध नस्लवाद जैसे भेदभाव के व्यापक दुष्परिणाम देखने को मिले हैं। शाब्दिक रूप में यह सामाजिक अन्याय, भेदभाव और हाशिए पर पड़े समूहों के अधिकारों के प्रति सजगता का भाव है। परन्तु भारत जैसे बहु-सांस्कृतिक, बहु-धार्मिक और असमानताओं से ग्रस्त समाज में ये विविधताएँ ऐतिहासिक हैं और इसके स्वदेशीय समाधान भी यहाँ उपलब्ध हैं। भाषा, धार्मिक आस्था, पंथ और जाति आदि के सन्दर्भ में भारतीय समाज अन्य देशों की तुलना में अधिक विविधता लिए हुए है। यह अवधारणा पश्चिम से आयातित होने के बावजूद विशिष्ट भारतीय संदर्भों में अलग-अलग प्रभाव डालती है। जाति, लिंग, अल्पसंख्यक अधिकार, दिव्यांगता और यौन पहचान जैसे हाशिए के समुदायों के अधिकारों के मुद्दों पर ध्यान के कारण सार्वजनिक विमर्श बढ़ने से समानता, गरिमा और न्याय के संवैधानिक मूल्यों की चर्चा मजबूत हुई। सार्वजनिक संवाद में अपमानजनक या भेदभावपूर्ण भाषा पर प्रश्न उठे हैं। कार्यस्थलों और शैक्षणिक संस्थानों में समावेशन की पहल, युवाओं में सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूकता एवं स्वयंसेवी अभियानों, ऑनलाइन कैंपेन और नीति-बहसों में भागीदारी बढ़ी है। लैंगिक न्याय, कार्यस्थल सुरक्षा, दिव्यांग अधिकार और सामाजिक सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सुधारात्मक बहस को गति मिली है। परन्तु पश्चिमी ढाँचों की नकल से भारतीय सामाजिक संदर्भ की अनदेखी हुई है और स्थानीय इतिहास, परंपराओं और सामाजिक जटिलताओं की उपेक्षा का जोखिम पैदा हुआ है। असहमति को 'असंवेदनशील' ठहराने की प्रवृत्ति से संवाद की जगह टकराव बढ़ा है और समाज में वैचारिक ध्रुवीकरण गहरा हुआ। 'कैंसल कल्चर' के कारण कलाकारों, शिक्षकों और लेखकों में आत्म-सेंसरशिप की प्रवृत्ति देखी गई। वोक विमर्श अभी तक भारत के शहरी एवं अंग्रेज़ी-भाषी वर्ग तक सीमित रहा है और ग्रामीण और श्रमिक मुद्दे अपेक्षाकृत पीछे छूट गए हैं। सतही तौर पर संवैधानिक दृष्टि में अनुच्छेद 14 से 18 तक वर्णित समानता, अनुच्छेद 19 की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अनुच्छेद 21 के अंतर्गत मानवीय गरिमा वॉकिज्म के मूल उद्देश्यों से मेल खाते प्रतीत होते हैं। परंतु कर्तव्यों की उपेक्षा से सहिष्णुता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सद्भाव की अनदेखी होने पर वॉकिज्म स्वयं असहिष्णु बन सकता है। इसलिए वॉकिज्म

भारत में जागरूकता का माध्यम बन सकता है, बशर्ते वह भारतीय सामाजिक यथार्थ, संवैधानिक मूल्यों और संवाद की संस्कृति के साथ आगे बढ़ें। अति-आक्रामक या आयातित रूप में यह समाज को बाँट सकता है; संतुलित, भारतीयकृत रूप में यह समावेशी और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में सहायक हो सकता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : सामाजिक समरसता का सांस्कृतिक मॉडल

प्राचीन काल में जो व्यवस्थाएँ निर्माण हुईं वे उस काल की आवश्यकता के अनुरूप तैयार की गयीं। आज यदि उनकी आवश्यकता न हो, उनकी उपयोगिता समाप्त हो गयी हो, तो हमें उनका त्याग करना चाहिए। अपनी वर्ण-व्यवस्था का ही विचार करे तो हमारे ध्यान में आयेगा कि समाज में चार प्रकार के कार्य समाज-धारणा के लिये वर्ण-व्यवस्था निर्मित हुई। व्यवस्था में वर्गीकरण का होना अपरिहार्य है। किन्तु आज तो अनेक कारणों से परिस्थिति पूर्णतया बदल गयी है। इस कारण नये युग, नये काल के अनुरूप विचार करना ही उचित होगा।[8] राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई। संघ का उद्भव औपनिवेशिक भारत के उस दौर में हुआ जब राष्ट्रीय अस्मिता, सांस्कृतिक आत्मविश्वास और सामाजिक संगठन की आवश्यकता तीव्र रूप से अनुभूत की जा रही थी। संघ स्वयं को एक राजनीति से दूर सांस्कृतिक–सामाजिक संगठन के रूप में परिभाषित करता है, जिसका लक्ष्य समाज का नैतिक, सांस्कृतिक और संगठनात्मक पुनर्निर्माण है। आरएसएस की वैचारिक धुरी 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' है। इसके अनुसार राष्ट्र केवल भौगोलिक या राजनीतिक इकाई नहीं, बल्कि साझा सांस्कृतिक स्मृति, परंपराओं और मूल्यों का समुच्चय है। इस दृष्टि में 'हिन्दू' शब्द को एक धार्मिक संप्रदाय की बजाय सांस्कृतिक पहचान के रूप में देखा जाता है। हिंदू वैचारिकी भारतीय विविधता को स्वीकार करती हुई इसे वास्तव में भारतीय सभ्यता की एकता के रूप में देखती है । संघ विचारधारा में समाज को एक 'जैविक इकाई' के रूप में देखा जाता है, जहाँ विभिन्न वर्ग, जातियाँ और समुदाय परस्पर निर्भर अंग हैं। इस अवधारणा के अनुसार सामाजिक संघर्ष की बजाय सामाजिक समन्वय पर बल दिया जाता है। यही बिंदु संघ के 'सामाजिक समरसता' विमर्श की आधारशिला है। हिंदुत्व की मूल अवधारणा में ही सह-अस्तित्व और शांति का सार्वकालिक सूत्र निहित है । सामाजिक समरसता हिंदू समाज की स्वाभाविक विशेषता है। भारत जैसे बहुधर्मी, बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में सामाजिक समरसता राष्ट्रीय एकता की आधारशिला है। एक शताब्दी से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आरंभ से ही समाज जीवन में एकात्मता, सांस्कृतिक एकता और सामाजिक सद्भाव को केंद्र में रखा है। संघ का दृष्टिकोण यह है कि समाज में व्यक्तियों के बीच व्याप्त भेदभाव मिटाकर 'एकात्म मानव' का निर्माण किया जाए, जिससे राष्ट्रशक्ति का विकास हो सके। समाज-केन्द्रित संगठन नीतिसंघ का बल सत्ता के बजाय समाज को संगठित करने में है। "संगठन ही शक्ति है" यह सिद्धांत सामाजिक सद्भाव का आधार है।

आरएसएस का दृष्टिकोण संघर्ष की जगह सहजीवन और मूल्य-आधारित सुधार पर आधारित है। अंतः यह सामाजिक आत्म-सुधार और सांस्कृतिक एकात्मता के साथ एक समानांतर स्वदेशी वैचारिकी प्रदान करता है। सामाजिक एकता के क्षेत्र में जातीय-सामाजिक विभेद कम करने का प्रयास, भारत की साझी सांस्कृतिक धारा का प्रसार, ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा विस्तार, सेवा संस्कृति को संस्थागत रूप देना, राष्ट्रबोध व स्वाभिमान के संवर्धन में संघ का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

सामाजिक समरसता हेतु आरएसएस के प्रयास

आरएसएस का कार्य चरित्र निर्माण कर अच्छे नागरिक के रूप में स्वयंसेवक तैयार करना है जो सद्भावना के वातावरण निर्माण हेतु सज्जन शक्ति को जागृत करते हुए वर्किंग टुगेदर सेपरटेली की भावना के साथ कार्य करे।[9] आरएसएस की स्थापना के शताब्दी वर्ष में जीवन शैली में कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, स्वबोध, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्य और अनुशासन के पांच परिवर्तनों को समाहित करने की बातें कही गई है।

महिलाओं के बारे में भारतीय चिंतन पश्चिम के देशों से अलग है। "मातृवत् परदारेषु" यानी दूसरों की स्त्री को अपनी माता के समान समझना। माता के रूप में समाज को सही दिशा में ले जाने की एक अन्तर्निहित शक्ति महिलाओं में होती है। महिला समानता, महिला अधिकार महिला सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में पाश्चात्य विचरण से अलग हैं। भारतीय संविधान

में विशिष्ट समूहों को आरक्षण व्यवस्था के सन्दर्भ में संघ का मत स्पष्ट है। क्या आरक्षण जातिवाद को बढ़ाता है या यह सामाजिक समरसता में बाधक है? के सम्बन्ध में संघ द्वारा यह स्पष्ट किया है कि अन्याय हुआ है तो उसका परिमार्जन भी होना चाहिए। जातिवाद एवं वर्णव्यवस्था को हिन्दू समाज की एकता में बाधक मानते हुए संघ का मानना है कि आज यह व्यवस्था वास्तव में अस्तित्व में नहीं है और इसके स्थान पर एक काल सुसंगत नई व्यवस्था की आवश्यकता है जो शोषण से मुक्त और समता युक्त हो।[10] संघ परिवार में अपने विभिन्न प्रकल्पों एवं आनुषांगिक संगठनों के समाज के विभिन्न कार्यक्षेत्र में कार्य कर रही है। प्रमुख रूप से सामाजिक समरसता प्रकल्प जातिगत भेदभाव को मिटाने के लिए सर्व समाज के लिए एक पनघट, एक कुआँ और एक श्मशान के उद्देश्य के साथ कार्यक्रम संचालित कर रही है। इसके अतिरिक्त देशभर में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक सुधार के क्षेत्रों में 1.5 लाख से अधिक सेवा प्रकल्प चल रहे हैं। सेवा भारती पिछड़ी बस्तियों में शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास के सेवा एवं पुनर्वास कार्य करता है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत विद्या भारती, जनजातीय (वनवासी) क्षेत्रों के विकास और उनकी संस्कृति के संरक्षण के लिए कार्यरत. वनवासी कल्याण आश्रम, दूरदराज के ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूल.एकल विद्यालय : दूरदराज के ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूल. सक्षम प्रकल्प दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण के लिए कार्य करने वाला संगठन के लिए कार्य करता है। प्रमुख आनुषांगिक संगठनों में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् विद्यार्थियों के लिए, श्रमिकों के लिए भारतीय मजदूर संघ, किसानों के लिए भारतीय किसान संघ, स्वदेशी अर्थव्यवस्था के लिए स्वदेशी जागरण मंच तथा धर्म एवं संस्कृति के लिए संस्कार भारती एवं विश्व हिन्दू परिषद् कार्य कर रही है। घर-घर संपर्क अभियान शताब्दी वर्ष (2025) के उपलक्ष्य में चलाए जा रहे हैं, जिसमें स्वयंसेवक घर-घर जाकर सामाजिक समरसता, पर्यावरण, स्वदेशी जैसे विषयों पर संवाद करते हैं। संघ का उद्देश्य हर नागरिक को अनुशासित, देशभक्त और समाज के प्रति जिम्मेदार बनाकर व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण एवं भारतीय संस्कृति और मूल्यों को बढ़ावा देकर देश में सांस्कृतिक और सामाजिक जागरण करना। आरएसएस के कार्यक्रम व्यक्तिगत अनुशासन से लेकर सामाजिक परिवर्तन तक फैले हुए हैं, जिसका लक्ष्य एक मजबूत और संगठित राष्ट्र का निर्माण करना है। संघ व्यक्ति के स्थान पर परिवार को समाज की इकाई मनाता है और इसीलिए महिलाओं के माध्यम से परिवार में संस्कार और सेवा की नींव डालने का कार्य महिलाओं का है। राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की प्रमुख भूमिका के मद्देनजर महिलाओं में राष्ट्रभाव, सेवा, संस्कार और नेतृत्व का विकास के लिए राष्ट्र सेविका समिति पूर्णतः महिलाओं के द्वारा संचालित किया जा रहा है।

आरएसएस के प्रयासों का तुलनात्मक एवं समालोचनात्मक विश्लेषण

समग्रता एवं अकादमिक पूर्णता के लिए आलोचनात्मक आयामों पर विमर्श महत्वपूर्ण है। हिंदू राष्ट्रवाद की संकीर्ण व्याख्या, बहुलतावाद तथा अल्पसंख्यक संबंधों पर विवादास्पद व्याख्या और राजनीतिक संगठनों से संबद्धता को आरएसएस की आलोचना की जाती है। संघ इन आलोचनाओं को यह कहकर निरस्त करता है कि उसका राष्ट्रवाद "सांस्कृतिक और समावेशी" है तथा उसका उद्देश्य सभी समुदायों का समान सम्मान है। संघ का मानना है कि पूजा-पद्धति भिन्न-भिन्न होने के बाद भी भारत के विभिन्न क्षेत्रो एवं वर्गों से आने वाले नागरिकों के पूर्वज एवं हमारा मूल एक ही हैं। इसलिए हिन्दू-मुस्लिम का भेद वास्तविक नहीं है। संघ का उद्देश्य विविध सामाजिक समूहों को एक प्लेटफॉर्म पर लाकर बंधुत्व, सहयोग और सांस्कृतिक मूल्यों को मजबूती प्रदान करना है।[11] राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भारत में सामाजिक सेवा, सांस्कृतिक समन्वय, वंचित वर्गों का सशक्तिकरण, सामाजिक समरसता और राष्ट्रनिर्माण की दिशा में व्यापक और उल्लेखनीय कार्य किए हैं। वैचारिक आलोचनाओं के प्रति संवाद और पारदर्शिता से यह विमर्श और समृद्ध हो सकता है। अभी हाल ही में दिल्ली में हुए सम्मेलन में देश-दुनिया के विद्वानों, आलोचकों एवं वैश्विक मीडिया के समक्ष विभिन्न संशयों एवं चिंताओं को स्पष्ट किया गया है।[12] इस प्रकार आरएसएस का योगदान सामाजिक सद्भाव, संगठन और सेवा-भाव पर आधारित एक सशक्त राष्ट्रीय मॉडल के रूप में देखा जा सकता है।

आधुनिक वॉकिज्म भारतीय परिप्रेक्ष्य में तभी सार्थक हो सकता है, जब वह केवल पश्चिमी प्रतिमानों की नकल न कर भारतीय समाज में विद्यमान जातिगत भेदभाव, लिंग भेद, आर्थिक

विषमता और धार्मिक ध्रुवीकरण को ध्यान में रखकर सामाजिक न्याय और समरसता को आगे बढ़ाए। जातीय असमानता के विरुद्ध वॉकिज्म सामाजिक न्याय की दिशा में एक प्रेरक शक्ति हो सकता है। लैंगिक समानता के लिए यह आंदोलन भारत की परंपराओं में निहित शक्ति और नारी-प्रधानता की अवधारणाओं को आधुनिक संदर्भों से जोड़ सकता है। धार्मिक विविधता को सम्मान देते हुए वॉकिज्म भारतीय समाज को साम्प्रदायिक सद्भाव की ओर ले जा सकता है। सकारात्मक मार्ग के रूप में वॉकिज्म की सफलता खुले दिमाग से स्वस्थ विमर्श का स्वागत करने में निहित है।[13] यहाँ यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि वॉकिज्म यदि अतिरेकी या पश्चिमी राजनीतिक शुद्धता के ढाँचे में सीमित रहकर भारतीय परंपरागत सांस्कृतिक मान्यताओं से टकराव की स्थिति उत्पन्न करता है, तो यह समरसता के बजाय विभाजन को जन्म दे सकता है। अतः भारतीय समाज में समरसता के दृष्टिकोण से वॉकिज्म को सजगता, संवाद एवं समन्वय की त्रयी पर आधारित होना होगा। समाज में समानता और न्याय की चेतना के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक बहुलता का सम्मान एवं इनमें संतुलन स्थापित कर वॉकिज्म भारतीय समाज में समरसता का एक सशक्त उपकरण बन सकता है।

आरएसएस के कार्यों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं का समुचित मूल्यांकन आवश्यक है। आरएसएस शाखाओं की गाँव-बस्तियों तक पहुंच है जिससे यह सामाजिक गठजोड़ की एक उपयोगी इकाई है। आपदाओं की स्थितियों में आरएसएस के स्वयंसेवकों द्वारा राहत कार्यों में सक्रियता सामुदायिक भरोसा बढ़ाती है। अपने विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से चले जा रहे सामाजिक नैतिकता, सेवा-भाव और नागरिक दायित्वों जैसे कार्यक्रमों ने युवा वर्ग में एक सकारात्मक सामाजिक व्यवहार की भावना उत्पन्न की है। आरएसएस की हिंदू-राष्ट्रवादी विचारधारा के अवधारणात्मक स्वरुप को जाने बिना कुछ समुदाय और सामाजिक वर्ग इसे सांप्रदायिक सन्दर्भ में देखते हैं। आरएसएस एक स्वयंसेवी संगठन है जिसकी सीमित नीतिगत प्रक्रिया और बाह्य समीक्षा के कारण लोक विश्वास प्रभावित होने की सम्भावना बनी रहती है। आरएसएस के पास सामाजिक समरसता बढ़ाने की पर्याप्त क्षमता और संसाधन हैं और वह पारदर्शिता, समावेशिता और संवेदनशीलता के साथ अपने कार्यक्रमों को संचालित करता है। फिर भी आरएसएस के समावेशी पहलुओं पर सामाजिक विकास कार्यक्रमों में लिंग, जाति या धर्म-आधारित समावेशिता पर प्रश्न उठते रहे हैं। इसलिए उपादेयता बढ़ाने हेतु आरएसएस को अपने संवाद-मार्गों को अधिक खुला, सहभागितामूलक और तटस्थ बनाए रखने की आवश्यकता है।

वॉकिज्म संघर्ष और पहचान पर आधारित न्याय की बात करते हुए अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के कैंसिल कल्चर, विरोध और सार्वजनिक नफरत की रणनीति अपनाता है। वहीं आरएसएस ने समरसता अप्रोच में एकात्मता और सांस्कृतिक सुधारों पर जोर देकर हमेशा संवाद, सेवा, सांस्कृतिक शिक्षा जैसे सृजनात्मक एवं रचनात्मक उपायों का सहारा लिया है। वॉक विभिन्न वर्ग एवं समूहों में समानता और पहचान को संशोधित करने के लक्ष्य हासिल करने में पीडितभाव का नैरेटिव खड़ा किया है जबकि आरएसएस एकता, मानव गरिमा और राष्ट्रीयता के द्वारा समरस समाज की स्थापना का प्रयास है। भारत की जटिल सामाजिक संरचना में जागरण व सुधार आवश्यक हैं, परन्तु आयातित वैचारिक मॉडल की नकल से तनाव उत्पन्न होता है; वहीं देशज सुधार-प्रक्रिया वास्तविक सामाजिक धरातल से जुड़ी रहती है। वॉकिज्म का भारत में क्रियान्वयन संदर्भहीन होने से इसका वैचारिक दुरुपयोग संभव है। एक समरस समाज के लिए असहमति का सम्मान करते हुए अकादमिक जगत में स्वदेशी ज्ञान-परंपरा की पुनर्स्थापना, डिजिटल मंचों पर विमर्श में नैतिकता आधारित फ्रेमवर्क एवं सामाजिक संरचनाओं में सहभागिता और कर्तव्य-केंद्रित न्याय एवं समाधान तंत्र में प्रतीकात्मक सक्रियता से आगे बढ़कर व्यावहारिक सुझाव जरूरी हैं।

निष्कर्ष

समकालीन वैश्विक परिदृश्य में वॉकिज्म सामाजिक न्याय, पहचान आधारित स्वीकृति और ऐतिहासिक अन्यायों के प्रतिकार का महत्वपूर्ण विमर्श प्रस्तुत करता है। पश्चिमी समाज से उद्भूत यह संवेदनशील विमर्श भारत के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में समाज को जाने बिना विभाजनोन्मुख परिणाम उत्पन्न करता है। सोशल मीडिया के इस दौर में नैरेटिव संघर्ष, पीड़ित पहचान की राजनीति तथा कैंसल-कल्चर जैसे रुझान बहुलतावादी एवं सहअस्तित्ववादी संस्कृति वाले भारतीय समाज के लिए चुनौती बनते हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दृष्टिकोण सामाजिक समरसता, राष्ट्र की एकात्मता,

सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय के सिद्धांत पर आधारित है। आरएसएस की गतिविधियों में कालांतर में भारतीय समाज में आई खामियों को दूर करने हेतु संवाद, सेवा और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का सहारा लिया जाता है। आरएसएस का यह मॉडल विरोध पर आधारित नहीं है बल्कि सकारात्मक एवं रचनात्मक होकर समावेश, स्व-सुधार और समुदाय आधारित परिवर्तन पर आधारित है।

इस अध्ययन से स्पष्ट है कि भारतीय समाज में सामंजस्य हेतु एक ऐसे मॉडल की आवश्यकता है जो आपसी टकराव और पहचान आधृत संघर्ष के बजाय सभ्यतागत नैतिकताओं, सकारात्मक संवाद, रचनात्मक सहयोग एवं आपसी विश्वास के साथ संवैधानिक मूल्यों के समन्वय से निर्मित होगा। वॉकिज्म से भारत में सामाजिक न्याय के विमर्श को एक ऊर्जा मिलती है परन्तु इसकी विदेशी संरचना भारत में सामाजिक संघर्ष की संभावनाएँ को भी बढ़ाती है। इसके विपरीत आरएसएस का सहअस्तित्व, आत्मसुधार एवं सांस्कृतिक एकात्मकता का मॉडल एक स्वदेशी वैकल्पिक ढाँचा प्रस्तुत करता है। वॉकिज्म समाज के ज्वलंत प्रश्नों को सामने रखता है लेकिन आरएसएस का समरसता व सांस्कृतिक संतुलन इस संघर्ष के लिए समाधान प्रस्तुत करता है। वॉकिज्म से लोकजीवन में जवाबदेही तथा नई ऊर्जा का संचार हुआ है परन्तु इसकी तीव्रता एवं संवाद रूपों से सामाजिक समरसता पर वास्तविक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। लोकविमर्श में और अधिक पारदर्शिता, समावेशन और व्यापक उदार संवाद लाकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे संगठन अपनी जमीनी पहुँच, सामुदायिक कार्यक्रम तथा आपदा राहत कार्य के बूते जन भरोसे से शांति और सामूहिक समरसता हेतु सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं।

वॉकिज्म और सामाजिक समरसता द्वंद्व का समाधान कठोर प्रतिबंध या अनियंत्रित खुलापन दोनों में नहीं है बल्कि विवेकपूर्ण संतुलन और उत्तरदायी नागरिकता के निर्माण में निहित है। अतः भारतीय समाज के लिए भविष्य का मार्ग न आक्रामक पहचान राजनीति है और न ही निरपेक्ष पारंपरिकता बल्कि एक संतुलित, संवादयुक्त, संस्कार समन्वित स्वदेशीय मॉडल है जिसमें संवेदनशीलता और समरसता दोनों का सहअस्तित्व हो।

सन्दर्भ सूची

1. वोकिज्मः ए क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ इट्स इम्पैक्ट ऑन सोसाइटी एंड द इमर्जेन्स ऑफ वोक कैपिटलिज्म, पीटर फिरी, डाइवर्सिटी एंड इक्वैलिटी इन हेल्थ एंड केयर
2. मोदी, नरेंद्र, सामाजिक समरसता, संपादन किशोर मकवाना, अनुवाद भट्ट, प्रेमशंकर, 2012, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 27
3. शर्मा, भगवती प्रसाद, हिंदुत्व की पहचान समरस समाज, 2017
4. वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष, 2024-25, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, बेंगलुरु
5. मल्होत्रा, राजीव, एवं विश्वनाथन, विजय, स्नैक्स इन द गंगा ब्रेकिंग इंडिया 2.0, ब्लयूवन इंक एलएलपी, नोएडा, पृ.सं. 31
6. मिश्रा, डॉ. राजीव, विषैला वामपंथ, शान्ति पब्लिशर्स इंडिया, नई दिल्ली, 2019, पृ.सं. 37
7. मोदी, नरेंद्र, पूर्वोक्त, पृ.सं. 27-29
8. सामाजिक समता और हिन्दु संगठन : श्री. बालासाहेब देवरस,प. पू. सरसंघचालक श्री. बालासाहेब देवरस द्वारा 1974 में पूना की 'वसंत व्याख्यानमाला' में दिया गया भाषण
9. पाथेय कण, पाक्षिक पत्रिका, 1-15 दिसंबर, 2025
10. पांच्यजन्य, हिंदी साप्ताहिक पत्रिका, भारत प्रकाशन (दिल्ली) लिमिटेड, अंक 7 सितम्बर 2025, पृ.सं. 28-30
11. ऑर्गनाइजर, अंग्रेजी साप्ताहिक पत्रिका, भारत प्रकाशन (दिल्ली) लिमिटेड, अंक-दिसंबर 2025, पृ.सं. 37
12. एचटीटीपीएसः//टाइम्स ऑफ इंडिया डॉट इंडियाटाइम्स डॉट कॉम/इंडिया/100-ईयर्स-ऑफ-संघ-आरएसएस-चीफ-मोहन-भागवत-ब्रीफ्स-मीडिया-लाइव-अपडेट्स/आर्टिकलशो/123564484.सीएमएस
13. मल्होत्रा, राजीव, विश्वनाथन विजय स्नैक्स इन द गंगा ब्रेकिंग इंडिया 2.0, पृ.सं. xlix ब्लयूवन इंक एलएलपी नोएडा